१८. लोककल्याणकारी स्वराज्य का प्रबंधन

बताओ तो

● शिवाजी महाराज ने किन-किन सत्ताओं के साथ संघर्ष किया ?

शिवाजी महाराज ने आदिलशाही, मुगल, पुर्तगाली और जंजिरेकर सिद्दी जैसे अन्यायकारी सत्ताओं के साथ दीर्घकाल युद्ध किए । परिणामस्वरूप स्वतंत्र हिंदवी स्वराज का निर्माण हुआ ।

राज्यप्रशासन का कार्य सुचारु रूप से चल सके; इसके लिए शिवाजी महाराज ने राज्यप्रशासन को आठ विभागों में बाँट दिया था । इसी को शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल कहते हैं । प्रत्येक विभाग के लिए एक प्रमुख को नियुक्त किया गया । इस प्रकार शिवाजी महाराज का अष्टप्रधान मंडल बना । अष्टप्रधान मंडल के माध्यम से चलाया गया शिवाजी महाराज का स्वराज्य यह सच्चे अर्थ में लोककल्याणकारी राज्य था । इन अष्टप्रधानों की तथा अन्य महत्त्वपूर्ण अधिकारियों की नियुक्तियाँ शिवाजी महाराज स्वयं उनकी योग्यता एवं गुणवत्ता परखकर करते थे । उनके प्रशासनकार्य पर शिवाजी महाराज का सूक्ष्म ध्यान रहता था । शिवाजी महाराज द्वारा निर्मित स्वराज्य में उनकी प्रजा सुख-शांति से रहने लगी । परिणामस्वरूप महाराष्ट्र की जनता में प्रखर आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और देशप्रेम दिखाई देने लगा ।

क्या तुम जानते हो ?

लोककल्याणकारी राज्य में प्रजा की भोजन, वस्त्र और आवास जैसी आवश्यकताएँ पूर्ण की जाती हैं । स्त्रियों का सम्मान किया जाता है । सामान्य जनता और किसानों के साथ धोखाधड़ी नहीं की जाती । प्रजा को तुरंत न्याय मिलता है । कृषि और उद्योगों का विकास होता है । लोककलाएँ विकसित होने लगती हैं । आम आदमी सुख-शांति से रहता है ।

अष्टप्रधान मंडल

	प्रधान का नाम	पद	कार्य
१.	मोरो त्रिंबक पिंगले	प्रधान	राज्य का शासन चलाना ।
२.	रामचंद्र नीलकंठ मुजुमदार	अमात्य	राज्य का आय-व्यय देखना ।
३.	हंबीरराव मोहिते	सेनापति	सेना का नेतृत्व करना ।
४.	मोरेश्वर पंडितराव	पंडितराव	धार्मिक कार्य देखना ।
५.	निराजी रावजी	न्यायाधीश	न्याय करना ।
६.	अण्णाजी दत्तो	सचिव	सरकारी आज्ञापत्र भेजना ।
७.	दत्ताजी त्रिंबक वाकनीस	मंत्री	पत्रव्यवहार करना ।
८.	रामचंद्र त्रिंबक डबीर	सुमंत	अन्य राज्यों से संपर्क बनाए रखना।

शिवाजी महाराज – किसानों को बैलों की जोड़ियाँ और अन्य जीवनावश्यक सामग्री देते हुए ।

करके देखो

- पाठ्यपुस्तक में अंकित 'आज्ञापत्र में पर्यावरण रक्षण' इस अंश को बड़े अक्षरों में लिखकर उसकी तालिका बनाओ तथा कक्षा में उसका सामूहिक वाचन करो ।

पर्यावरण का संरक्षण

प्रकृति ने अलग-अलग प्रदेशों पर भूमि, हवा, वर्षा, नदियाँ, समुद्र, नाले, वन, छोटे-बड़े प्राणी, पक्षी, सूर्यप्रकाश, चंद्रमा का प्रकाश का निर्माण किया । इन सभी घटकों द्‌वारा मानव के चारों ओर जो परिसर निर्माण होता है इसी को 'प्राकृतिक पर्यावरण' कहते हैं । इस पर्यावरण का आवश्यक मात्रा में उपयोग कर लेना मानव के हित में होता है ।

पर्यावरण में पाए जानेवाले इन विभिन्न घटकों का विनाश नहीं होगा इसकी सावधानी शिवाजी महाराज ने ली थी यह दिखाई देता है ।

लोगों द्‌वारा राज्य के वनों का विनाश नहीं होगा, इस ओर शिवाजी महाराज ने अधिक ध्यान दिया । जैसे-नौसेना के लिए छोटी-बड़ी नावें, जलपोत, पतवार, डंडे बनाने पड़ते हैं । इसके लिए लकड़ी की आवश्यकता होती है । परिणामस्वरूप केवल सागौन के ही वृक्ष काटें । अधिक सागौन की आवश्यकता हो तो दूसरे राज्यों से वह खरीदें परंतु किसी भी स्थिति में आम, कटहल आदि पेड़ काटे न जाएँ क्योंकि ये पेड़ वर्ष-दो वर्ष में बढ़ते नहीं हैं। प्रजा इन पेड़ों का लालन-पालन अपनी संतान की तरह करती है । अतः इन पेड़ों को काटकर प्रजा को दुख न पहुँचाएँ । यदि कोई पेड़ बहुत ही पुराना-ठूँठ हो गया हो तो उस पेड़ के स्वामी को नकद पैसा देकर संतुष्ट करें तथा उसके

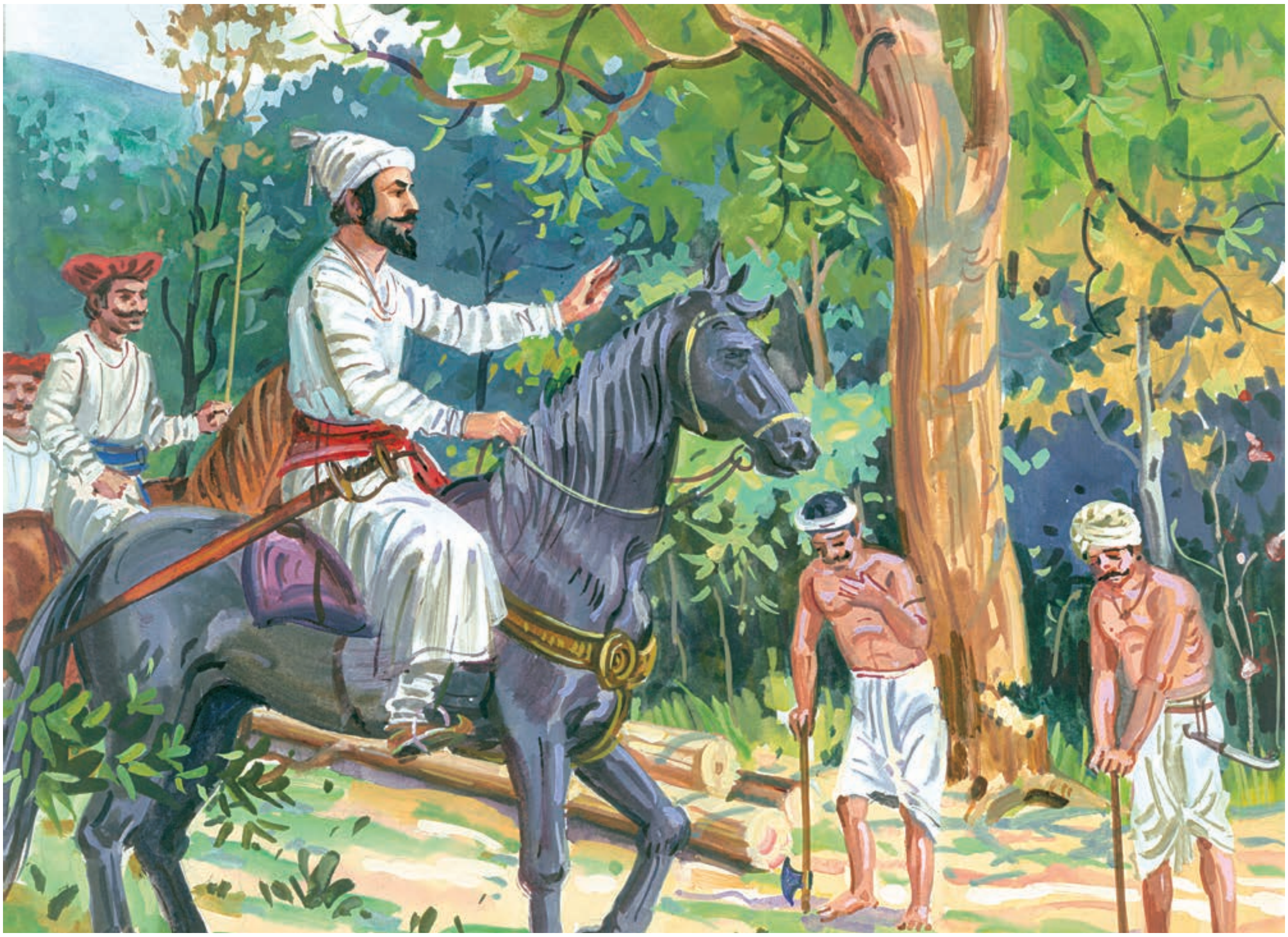

पर्यावरण का संरक्षण

बाद ही वह पेड़ काटें इस प्रकार के आदेश शिवाजी महाराज ने दिए थे, आज्ञापत्र से यह ध्यान में आता है ।

यह सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण रक्षण का महत्व समझाने और पर्यावरण के विनाश को रोकने के लिए ५ जून का दिन प्रतिवर्ष 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

जल प्रबंधन

शिवाजी महाराज ने स्वराज्य के गाँव-गाँव में छोटे-बड़े बाँध बँधवाकर लोगों के लिए पेयजल उपलब्ध कराया । इसी तरह इन बाँधों में नहरें बनवाकर खेती के लिए भी पानी उपलब्ध कराया । इससे स्वराज्य की आय में वृद्धि हुई । स्वराज्य की प्रजा को अकाल की भीषणता का कभी भी अनुभव नहीं हुआ । शिवाजी महाराज के कार्यकाल में लोग अधिक संख्या में गढ़ों पर बस्ती बनाकर रहते थे । वहाँ पानी की व्यवस्था करने के विषय में शिवाजी महाराज सावधानी बरतते थे । गढ़ का निर्माण करवाने से पूर्व यह देखा जाता था कि क्या उस स्थान पर पर्याप्त पानी है ? यदि किसी स्थान पर पानी न हो तो वहाँ वर्षाकाल प्रारंभ होने से पूर्व ही तालाब और टंकियाँ बाँधकर उनमें वर्षा का जल इकट्ठा किया जाता था ।

यह संग्रहित जल किफायत से उपयोग में लाया जाता था । इस प्रकार के जल प्रबंधन के कारण गढ़ पर रहनेवाले लोगों को और स्वराज्य की प्रजा को अकाल में भी पानी का अभाव अनुभव नहीं होता था ।

शिवाजी महाराज ने नहरें बँधवाकर खेती और पेयजल का प्रबंध करवाया ।

बताओ तो

- पानी का उपयोग किफायत से क्यों करना चाहिए ?
- तुम्हारे गाँव / परिसर में कौन-सा बाँध, तालाब है ?
- जल प्रबंधन किसे कहते हैं ?
- जल प्रबंधन को लेकर सरकार की कौन-सी योजनाएँ हैं ?

क्या तुम जानते हो ?

- प्रदेश को अकाल से स्थायी रूप में मुक्त करने के लिए सरकार ने 'जलयुक्त खेती' योजना प्रारंभ की है ।

अकाल निवारण

अकाल में शिवाजी महाराज किसानों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करते थे । प्रजा को लगान माफ कर देते थे । इससे स्वराज्य में अकाल की भीषणता कम हो जाती । किसी वर्ष स्वराज्य में अकाल पड़ता तो शिवाजी महाराज सरकारी गोदामों में जमा किया हुआ अनाज प्रजा में निःशुल्क बाँट देते । इसी तरह अकाल के वर्ष में शिवाजी महाराज गढ़ों/किलों की मरम्मत के कार्य प्रारंभ करते । साथ-साथ बाँधों, नहरों, छोटे बाँधों के भी कार्य आरंभ करते । इन कामों से किसानों के साथ-साथ कारीगरों-परजा-पवन को रोजगार मिलने से स्वराज्य में प्रजा को अकाल की भयानकता का अनुभव कभी भी नहीं हुआ ।

किसान संपन्न हुआ । कल तक जिसके पाँव में जूते नहीं थे उसने जूते खरीदे । शरीर पर कपडे नहीं थे उसने कपड़े खरीदें । इससे बुनकरों को रोजगार प्राप्त हुआ । जिनके पास रहने के लिए मकान नहीं थे, वे मकान बनवाने की स्थिति में आ गए । फलतः मकान बनवाने वाले राजगीरों, बढ़इयों, लुहारों और ईंटें बनानेवाले कुम्हारों को

काम मिला । इस तरह स्वराज्य में किसानों के साथ-साथ कारीगर-श्रमिक भी सुखी और संपन्न बने ।

बताओ तो

- तुम्हारे गाँव/परिसर की बाजार-हाट का नाम बताओ ।
- बाजार-हाट को वह नाम क्यों मिला होगा; इसकी जानकारी बताओ ।

सागरीय व्यापार और अन्य व्यापार मंडियाँ

स्वराज्य की रक्षा भली-भाँति हो सके; इसके लिए स्वराज्य से लगे सागर पर अपना आधिपत्य होना चाहिए; इस उद्‌देश्य से शिवाजी महाराज ने अपनी स्वतंत्र नौसेना का निर्माण करवाया । इतना ही करके वे रुके नहीं बल्कि स्वराज्य में व्यापार बढ़े इसलिए माल की ढुलाई करनेवाले विशेष प्रकार के जहाजों का निर्माण करवाया । राजापुर जैसे व्यापारिक बंदरगाहों का विकास करवाया । इसी तरह रायगढ़ पर विशेष बाजार-हाट बसाई । पुणे के समीप खेड़ शिवापुर के रूप में स्वतंत्र व्यापारिक मंडी प्रारंभ की । बड़े गाँवों में तथा सड़क किनारे गाँवों में व्यापारिक हाटों का निर्माण करवाया । वीरमाता जिजाबाई के आदेश पर पुणे के समीप पाषाण गाँव में एक नई हाट बनवाई गई थी । उसका उल्लेख 'जिजापुर' के रूप में किया जाता था ।

स्वराज्य के व्यापार में वृद्‌धि हो इसलिए शिवाजी महाराज ने बाहरी प्रदेशों से आनेवाली वस्तुओं पर अधिक कर लगाया । उन्होंने पुर्तगाली सीमा से आनेवाले नमक पर अधिक कर लगाया । इससे उस नमक की कीमत बढ़ गई परंतु स्वराज्य में तैयार होनेवाले नमक पर कर कम कर दिया । फलतः लोगों को स्वराज्य में बना नमक सस्ते में मिलने लगा, अर्थात स्वराज्य के नमक का व्यापार बढ़ा और स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला ।

स्वराज्य में चलनेवाले व्यापार-उद्‌योगों में वृद्‌धि होने के लिए शिवाजी महाराज प्रयासरत थे । अपनी प्रजा के साथ व्यापारी किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी-ठगी न करें; इसकी ओर वे विशेष रूप से ध्यान देते थे । कोकण में नारियल और सुपारी के व्यवसाय में लोगों के साथ धोखाधड़ी की जा रही है; यह पता चलने पर शिवाजी महाराज ने वहाँ के सूबेदार को चेतावनी दी थी ।

स्त्रियों के प्रति सम्मान :

शिवाजी महाराज का आदेश था कि युद्‌ध के समय शत्रु दल की स्त्रियों अथवा बच्चों को किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचनी नहीं चाहिए । उल्टे उनके साथ सम्मान का व्यवहार करें । उन्होंने स्वयं अपने आचरण से स्त्रियों के साथ किस प्रकार सम्मान का व्यवहार किया जाता है; इसका आदर्श प्रस्तुत किया है ।

मराठी सेना कनार्टक की बेलवड़ी में गढ़ी जीतने के लिए गई थी । उस गढ़ी की रक्षा करने के लिए मल्लम्मा देसाई नामक वीरांगना ने प्रखर संघर्ष किया । उसकी वीरता का समाचार शिवाजी महाराज तक पहुँचा । उन्होंने मल्लम्मा को अपनी छोटी बहन मान लिया और उसकी गढ़ी और उसके गाँव सम्मानपूर्वक उसे लौटाए तथा उसे 'सावित्री' उपाधि प्रदान की ।

स्वच्छता के प्रति सजगता :

अपने आवासों और सार्वजनिक स्थानों को किस प्रकार अधिकाधिक स्वच्छ रखा जा सकता है; इस विषय में भी शिवाजी महाराज के कार्यकाल में की गई उपाय योजना ध्यान में आती है । घर के चारों ओर निर्गुंडी अथवा सिंदुवार के पेड़ों की बाड़ खड़ी करके घर में चूहे, बिच्छू, कीड़े, चींटी जैसे प्राणी प्रवेश न कर सकें; इसकी सतर्कता बरतें । इसी तरह धुआँ बनाकर स्वास्थ्य के लिए हानिकर जीव-जंतु नष्ट करें ऐसे आदेश शिवाजी महाराज द्‌वारा

शिवाजी महाराज बेलवड़ी की मल्लमा देसाई का सम्मान करते हुए ।

दिए गए थे ।

गढ़ के बाजारों में, सड़कों पर कूड़ा-करकट नहीं रहेगा इसकी चेतावनी दी गई थी । इतना होकर भी यदि सभी जगह कूड़ा-करकट पड़ा होगा तो उसे गढ़ के नीचे न फेंकें । उस कूड़े-करकट को वहीं पर जलाकर नष्ट कर दें और उसकी राख का क्यारियों में रोपी हुई साग-सब्जियों के लिए खाद के रूप में उपयोग करें; ऐसी विभिन्न सूचनाएँ देखने को मिलती हैं ।

शिवाजी महाराज ने गढ़ों का निर्माण, तोपें-बारूद, आरमार पर्यावरण का संरक्षण, जल प्रबंधन, समुद्री व्यापार और व्यापारिक मंडियाँ और स्वच्छता के प्रति सतर्कता के विषय में जो प्रबंधन किया था वह आज भी मार्गदर्शक सिद्‌ध होता है ।

हिंदवी स्वराज्य

हिंदवी स्वराज्य शिवाजी महाराज का स्वप्न था । हिंदवी का अर्थ है-हिंदुस्तान में रहनेवाले फिर वे किसी भी धर्म अथवा जाति के हों । उनका राज्य वही हिंदवी स्वराज्य ।

उदार धार्मिक नीति

शिवाजी महाराज की धार्मिक नीति बड़ी उदार थी । अभियानों के चलते शिवाजी महाराज ने मस्जिदों को क्षति नहीं पहुँचाई । यदि कभी कुरआन शरीफ की कोई प्रति उन्हें मिलती तो वे बड़े सम्मानपूर्वक उसे किसी मुसलमान को सौंप देते थे । केवल मुसलमान होने के कारण वे उसका द्‌वेष नहीं करते थे । यदि किसी ने अपना धर्म बदल दिया परंतु वह पुनः अपने धर्म में आना चाहता है तो वे उसे दूर नहीं रखते थे । बजाजी नाईक-निंबालकर शिवाजी महाराज का साला था । वह बीजापुर के आदिलशाह की नौकरी में था । आदिलशाह ने उसका धर्म परिवर्तन किया था । बजाजी बीजापुर में रहने लगा । उसे किसी बात की कमी नहीं थी परंतु यह बात उसके मन को कचोटती थी कि उसने

अपना धर्म बदला है । उसे यह बुरा लगता था । उसने पुनः अपना धर्म अपनाने का निश्चय किया । शिवाजी महाराज ने उसको अपने धर्म में लिया । नेतोजी पालकर की कहानी भी ऐसी ही है । नेतोजी पालकर का धर्म बदला गया था लेकिन उसे फिर से अपने धर्म में आने की इच्छा हुई । शिवाजी महाराज ने उसे भी फिर से अपने धर्म में ले लिया ।

शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप : गहन अंधकार में अपनी दिशा निश्चित करके मार्ग निकालना, संकट आने पर भी निर्भीकता से उनपर विजय प्राप्त करना और आगे बढ़ना, शक्तिशाली शत्रुओं के साथ अपनी अल्प शक्ति के साथ लड़ते हुए अपनी सामर्थ्य बढ़ाते रहना; अपने साथियों को उत्साहित करते हुए और शत्रुओं को चकमा देते हुए

क्या तुम जानते हो ?

- शिवाजी महाराज साधुओं-संतों सज्जनों का बहुत आदर सम्मान करते थे । उन्हें मंदिर प्रिय थे । उन्होंने मस्जिदों का भी रक्षण किया । उनके लिए भगवद्गीता पूजनीय थी तो उन्होंने कुरआन शरीफ का भी आदर किया । ईसाई लोगों के प्रार्थनास्थानों का भी ध्यान रखा । शिवाजी महाराज विद्वानों का आदर-सम्मान करते थे । उन्होंने परमानंद, गागाभट्ट, धुंडीराज, भूषण आदि विद्वानों का आदर-सत्कार किया । इसी तरह संत तुकाराम, समर्थ रामदास, बाबा याकूत, मौनीबाबा का भी आदर बहुमान किया ।

शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप

यश प्राप्त करना आदि सभी गुण शिवाजी महाराज में विद्‌यमान थे । आदर्श पुत्र, सजग नेता, कुशल संगठनकर्ता,जनकल्याणकारी प्रशासक, बुद्‌धिमान योद्‌धा, दुर्जनों का संहारक, सज्जनों का रक्षक और नवयुग का निर्माता जैसे शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व के अनगिनत तेजस्वी पहलू हैं । यह सब देखा कि मन में बार-बार यही भाव उठता है -

'शिवरायांचे आठवावे रूप ।
शिवरायांचा आठवावा प्रताप ।
शिवरायांचा आठवावा साक्षेप भूमंडळी ।।'

(शिवाजी महाराज का स्मरणीय रूप, शिवाजी महाराज का स्मरणीय प्रताप, शिवाजी महाराज का स्मरणीय प्रजा निष्ठा स्वरूप।)

स्वाध्याय

१. बताओ तो !

(अ) स्वतंत्र हिंदवी स्वराज्य का निर्माण हुआ ।

(आ) स्वराज्य की प्रजा को अकाल (सूखे) की भीषणता का कभी भी अनुभव नहीं हुआ ।

(इ) शिवाजी महाराज ने मल्लम्मा देसाई को उपाधि प्रदान की ।

२. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो और तालिका पूर्ण करो ।

३. विचार विमर्श करो ।

पर्यावरण के विविध घटकों का विनाश नहीं होगा; इसके लिए शिवाजी महाराज द्‌वारा किस प्रकार सावधानी ली गई? तुम पर्यावरण का रक्षण करने हेतु क्या-क्या करोगे?

४. पढ़ो और अपने शब्दों में जानकारी बताओ ।

'जल प्रबंधन' विषय से संबंधित जानकारी पढ़ो और इस विषय पर अपने शब्दों में जानकारी बताओ ।

	प्रधान का नाम	पद	कार्य
१.	मोरो त्रिंबक पिंगले	------	राज्य का शासन चलाना ।
२.	------------	अमात्य	राज्य का आय-व्यय देखना ।
३.	हंबीरराव मोहिते	सेनापति	------------
४.	मोरेश्वर पंडितराव	------	धार्मिक कार्य देखना ।
५.	------------	न्यायाधीश	------------
६.	अण्णाजी दत्तो	------	------------
७.	------------	------	पत्रव्यवहार करना ।
८.	रामचंद्र त्रिंबक डबीर	सुमंत	------------

उपक्रम :

(अ) तुम्हारी कक्षा द्‌वारा विद्‌यालय के अहाते में बाजार का आयोजन करो । विविध वस्तुओं और उनके मूल्यों की सूची बनाओ । इसके लिए परिसर के बाजार में जाओ और निरीक्षण करो ।

(आ) तुम्हारे विद्‌यालय के परिसर में तुमने कौन-से पेड़ लगाए हैं और उनका संवर्धन किस प्रकार करते हो; यह बताओ ।

6KQEC3

‘आज्ञापत्र में’ पर्यावरण का संरक्षण

यह आज्ञापत्र रामचंद्रपंत अमात्य द्‌वारा लिखा गया है । इसमें शिवाजी महाराज की नीतियाँ प्रतिबिंबित हुई हैं । निम्न अनुच्छेद द्‌वारा शिवाजी महाराज का पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण प्रकट होता है ः

‘‘युद्‌धपोतों के तख्ते, बल्लियाँ, मस्तूल आदि के लिए मजबूत लकड़ियों की आवश्यकता होती है । हमारे राज्य में सागौन आदि वृक्ष हैं । इन कार्यों के लिए आवश्यक लकड़ी सरकार की लिखित अनुमति लेकर काटें । इसके अतिरिक्त आवश्यक लकड़ी दूसरे राज्यों से खरीदकर लाई जाए । स्वराज्य में आम, कटहल आदि पेड़ भी युद्‌धपोतों के निर्माण की दृष्टि से उचित हैं परंतु इन पेड़ों के साथ छेड़-छाड़ न करें क्योंकि ये पेड़ दो-तीन वर्षों में बढ़ते नहीं हैं । प्रजा ने इन पेड़ों को संतान की तरह लंबे समय तक पोषण कर बढ़ाया है । इन पेड़ों को काटने से उनके दुखों का पारावार नहीं रहता । एक को दुखी बनाकर जो यह कहता है कि मैंने कोई कार्य किया है तो उस कार्य करने वाले का उद्‌देश्य न केवल अल्पकालिक होता है और वह शीघ्र ही नष्ट होता है अपितु उसके स्वामी के सिर पर प्रजा को पीड़ित करने का दोष आ जाता है । इन वृक्षों के अभाव में क्षति भी होती है । अतः यह बात कदापि नहीं होनी चाहिए । यदि कोई पेड़ बहुत पुराना, जीर्ण और अनुपयोगी हो गया हो तो उस पेड़ के स्वामी को मनाकर तथा उचित धन देकर और उसकी इच्छा से वह पेड़ काटा जाए ।....’’

राजगढ़

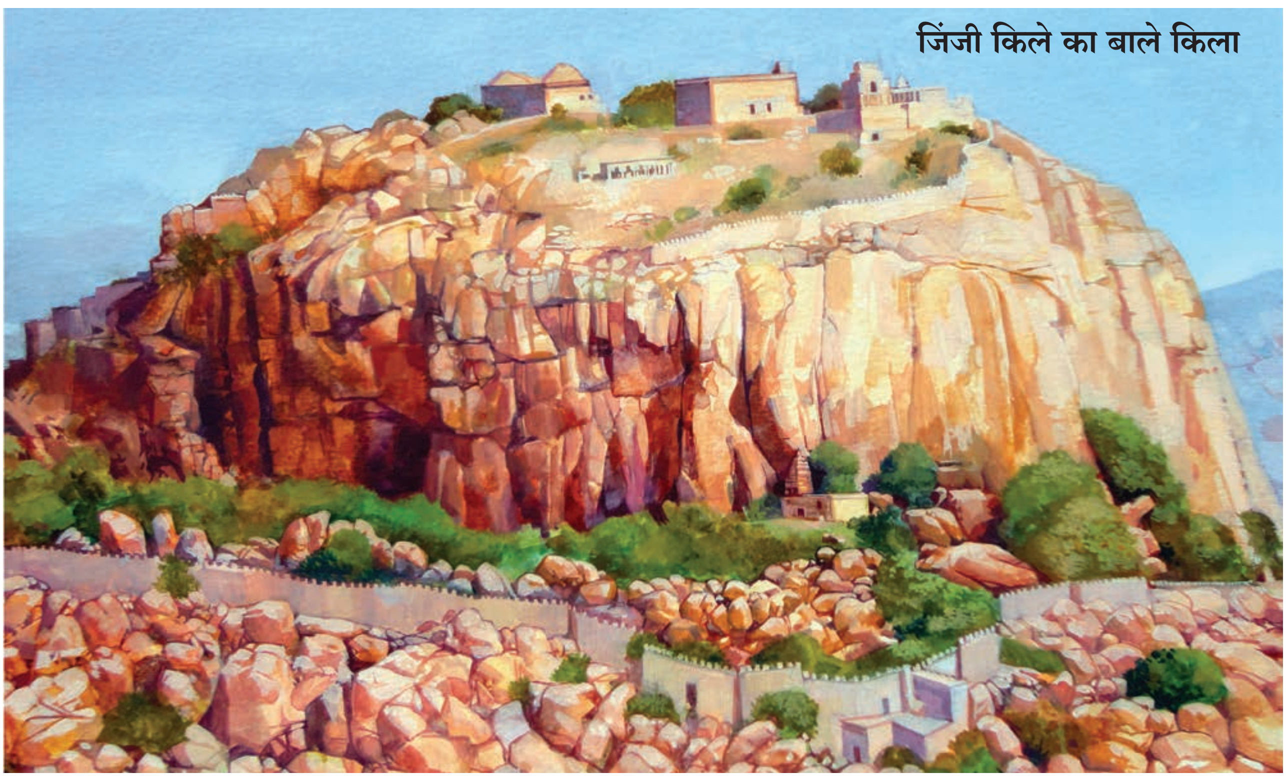

जिंजी किले का बाले किला

जिंजी किला वर्तमान तमिलनाडु प्रदेश में है । छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने दक्षिण दिग्विजय अभियान में इस किले को जीत लिया था। यह किला अपने-आप में बहुत दुर्गम था फिर भी शिवाजी महाराज ने उसके पहलेवाले परकोटों को तोड़कर नए परकोटे और बुर्ज बाँधे और इस किले को अधिक दृढ़ और शक्तिशाली बनाया । दृढ़ और शक्तिशाली किलों का निर्माण किस प्रकार करवाया जाता है; इसकी शिक्षा शहाजीराजे ने उन्हें बचपन में दी थी । शिवाजी महाराज ने उस शिक्षा का उपयोग ऐसे अवसरों पर किया; यह दिखाई देता है । कालांतर में राजाराम महाराज ने इस किले को अपनी राजधानी बनाई । जब वे इस किले में थे तब मुगलों ने इसे घेर लिया था परंतु राजाराम महाराज इस घेरे में घिरे रहने के बावजूद लगभग सात साल तक इस किले में रहकर लड़ते रहे । शिवाजी महाराज ने दूरदृष्टि रखकर इस किले को दृढ़ और शक्तिशाली बनवाया था और इसीलिए राजाराम महाराज इतने लंबे समय तक इस किले में सुरक्षित रह सके ।

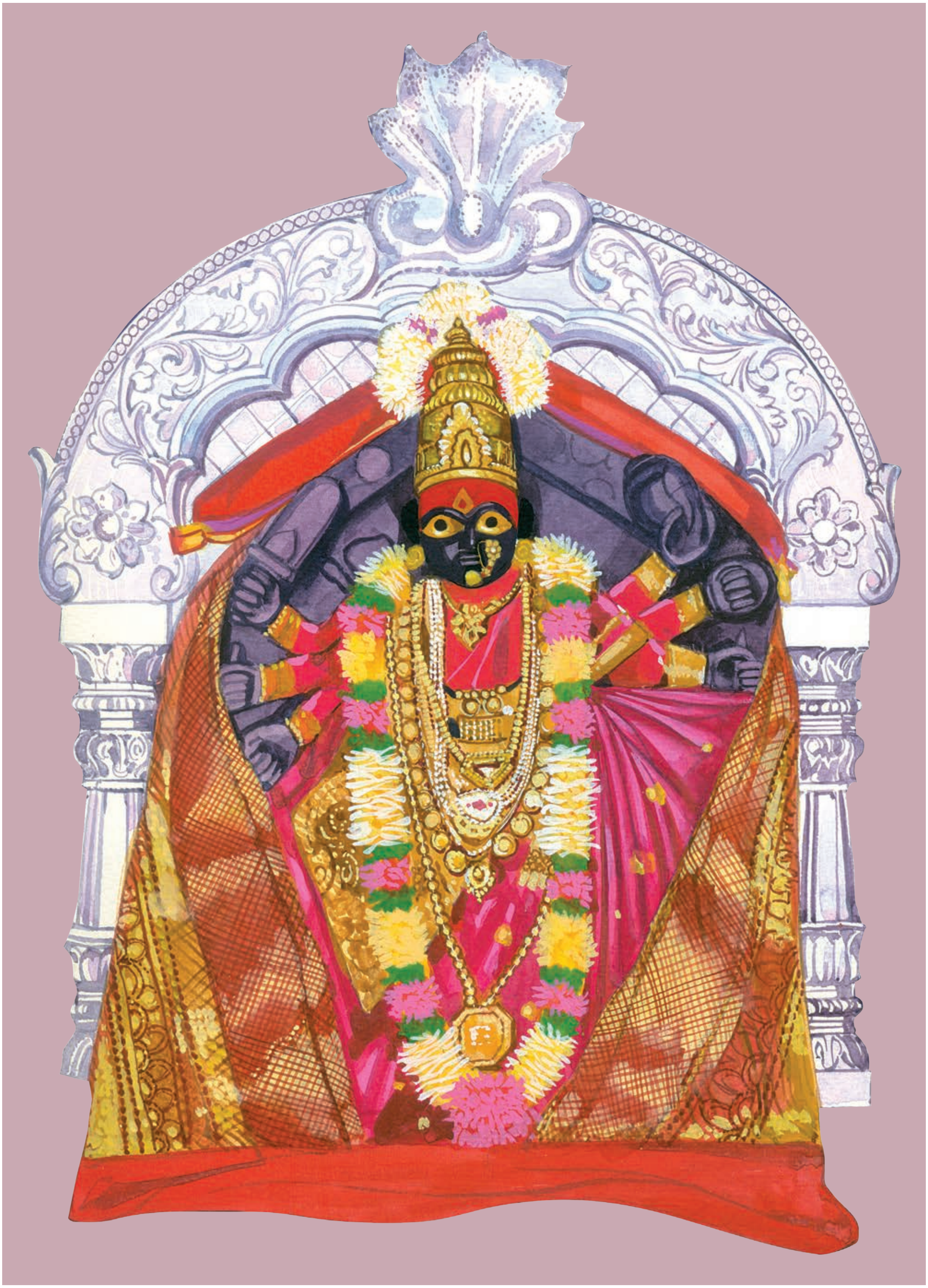

देवी भवानी – प्रतापगढ़

‘शत्रु की छावनी को नष्ट करके अपनी छावनियाँ स्थापित करें ।’ इस उद्‌देश्य से छत्रपति शिवाजी महाराज द्‌वारा मुरगूड परगना (जि. कोल्हापुर) के देसाई रुद्राप्पा नाईक को दिनांक ११ दिसंबर १६७६ ई. को भेजा गया यह पत्र मोडी (सर्राफा) लिपि में है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

परिसर अध्ययन भाग – २ इ. ४ थी (हिंदी माध्यम)

₹ ३६.००